आतम रूप अनुपम अद्‌भुत,....

(कविवर पण्डितश्री दौलतरामजी)

आतम रूप अनुपम अद्‌भुत, याहि लखैं भवसिंधु तरो ॥टेक॥

अल्पकाल में भरतचक्रधर, निज आतम को ध्याय खरो।
केवलज्ञान पाय भवि बोधे[१], ततछिन पायो लोक शिरो ॥1॥

या बिन समझे द्रव्यलिंग मुनि, उग्र तपन कर भार भरो।
नव ग्रीवक पर्यन्त जाय चिर, फेर भवार्णव[२] माहिं परो ॥2॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरन तप, येहि जगत में सार नरो।
पूरव शिवको गये जाहिं अब, फिर जै हैं यह नियत करो ॥3॥

कोटि ग्रन्थ को सार यही है, ये ही जिनवानी उचरो।
'दौल' ध्याय अपने आतम को, मुक्तरमा तब वेग वरो ॥4॥

---

१. ज्ञान; २. भवचक्र